वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 27	Year 3	Volume 3	November 2014 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

असली मित्र कोन है ?

एक बार एक अच्छा व्यक्ति निर्दोष होने के बावजूद अदालत में **दोषी** होने के कगार पर आ गया। उसके वकील ने उसे कहा कि अदालतें तो सबूत व गवाह मांगती है। अगर तुम्हारे पास गवाह है तभी बचाव हो सकता है।

उस व्यक्ति के तीन बहुत **घनिष्ठ** मित्र थे, जिन पर उसे बहुत भरोसा था । पहले वह उस के पास गया, जिसे वह सब से **घनिष्ठ** मानता था, उसने कुछ हमदर्दी के शव्द कहकर अपना पीछा छुड़वाया। जब दूसरे के पास गया तो उसने कहा––मित्र अगर कुछ धन चाहिये तो मैं दे सकता हूं पर इन कोर्ट कचहरी के चक्करों में नहीं पड़ना चाहता। हताश वह आखीरकार तीसरे मित्र के पास गया। उसने बात सुनी तो खुशी से न्यायधीश के पास गवाह बनकर जाने को तैयार हो गया। इसी तरह, हम भी अपनी ज़िन्दगी में अपने तीन मित्रों पर बहुत भरोसा कर के चलते हैं। सब से बड़ा मित्र हम अपनी जायदाद व धन दौलत को मानते हैं पर यह मित्र न तो हमें मृत्यु से बचा सकता है और न ही जब बुढ़ापे के कारण अंग काम करने बन्द कर देते है तब सहायक होता है। हमारे सगे सम्बन्धी हमारे दूसरे मित्र की तरह हैं, वे शमशान भूमी तक ही साथ चलेगें। हमारे तीसरे मित्र हैं, अच्छे कर्म जो कि मृत्यु के पश्चात भी हमारे साथ रहकर हमारे अगले जन्म को सुधारेगें।

हम पुराणों में पढ़ते है कि धर्मराज ने हमारे अच्छे व बुरे कर्मो का खाता रखा होता है, यदि अच्छे कर्म बुरे कर्मो से अधिक हों तो मानव योनी मिलती है वरना बाकी 1,86000 में से किसी एक योनी में, हमारे कर्मो के अनुसार जन्म होता है। चाहे यह 186000 योनीयों की बात केवल ऐक ढकोंसला हो

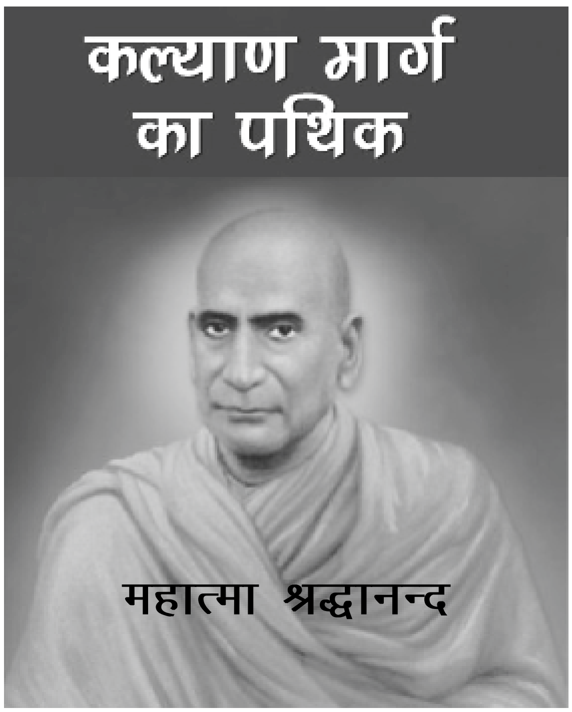

समाज व राष्ट्र के लिये अपना वर्चस्व त्याग दिया, ऐसा व्यक्ति ही देवता और महात्मा कहलाने का हकदार है।

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

पर जो बात सीखने वाली है वह यह है कि **मनुष्य** योनी बहुत कीमती है व यह तभी नसीब होती है जब हमारे कर्म अच्छे होंगे। यही नहीं अगर कर्म अच्छे नही तो मानव का चोला पाकर भी हम अपने खराब कर्म को भोग कर दुख पायेंगे। क्योंकि कर्म तो भोग कर ही खत्म होते हैं।

श्रेष्ठ कर्म करते हुए जीने की इच्छा करना भारतीय जीवन दर्शन है। ' कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेत' हे **मनुष्यो** ! पुरूषार्थी और कर्मशील बनो।

जहा अच्छें कर्मो से **मनुष्य** देवता बनता है, वही बुरें कर्मो से **मनुष्य** राक्षस बन जाता है। यह संसार कर्म की खेती है। जो जैसा बोता है वैसा काटता है। जैसा बीज वैसा फल। जैसी करनी वैसी भरनी। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। जीव कर्मानुसार जगत में आता है और उसी के अनुसार फल भोगकर चला जाता है। अकेला आता है और अकेला ही चला जाता है। जो इन्सान कर्म करता है, उसी के आधार पर जाति,आयु तथा भोग प्राप्त होते हैं।

हमने कर्म कैसे किये इसका मूल्यांकन तो हम खुद कर सकते हैं। प्रार्थना करते समय अपने कर्मो का मूल्यांकन करे या रात को सोने से पहले बिस्तर पर बैठ कर पांच मिन्ट के लिये सोचिये आज का दिन कैसा बीता। हमने अपने आप से दो प्रश्न पूछने हैं। पहला——क्या मैने कोई ऐसा कार्य तो नहीं किया जिससे दूसरे के मन को ठेस पहुंची हो? दूसरा———क्या मैने कोई ऐसा कार्य किया जिससे दूसरे का जीवन बेहतर हो गया हो?

किसी सन्त से मैने उपदेश में सुना था कि हम **मनुष्यों** को तीन श्रेणीयों में बांट सकते हैं। पहली श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो अपने को **कष्ट** में डाल कर भी दूसरों को सुख पहुंचाते हैं। इन्हे हम देवता कहते हैं। दूसरी श्रेणी में वे आते हैं जो काम करते हुये यह ध्यान रखते हैं कि हमारे कार्य से दूसरे को **कष्ट** न हो——मेरा भी कल्याण दूसरे का भी कल्याण। हां इस श्रेणी के व्यक्ति जिन्हे '**मनुष्य** कहा गया है देवताओं की तरह दूसरों को सुख पहुंचाने के लिये अपने को कष्ट में नहीं डालते। तीसरी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो दूसरों को दुख पहुंचाने के लिये व दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिये, अपना खुद का नुकसान करने में भी परहेज़ नहीं करते। ऐसे लोगों को असुर कहा गया है।

आगे उन सन्त ने कहा—— देवता बनना आसान नहीं पर हम **मनुष्य** बनें और असुर कभी न बने।

मनुष्य कैसे बने?— आदमी दुनियां के कामों को करते हुए अपने जीवन को दीन—दुखियों की सेवा में लगाए, मानवता के हर एक काम को करते हुए गौरव अनुभव करें। ईश्वर महान—दयालु है, इस लिए सच्चा ईश्वर भक्त बनने के लिये हर रोज कुछ न कुछ दया का काम करना चाहिए। जब आदमी दया—क्षमा—प्यार—नम्रता आदि गुणों से अपने जीवन को भर लेता है, तब मन शान्ति से भर जाता है और इस प्रकार मानव को अनुभव होता है कि जीवन का हर पल संगीत की तरह आनन्दमय बन गया है। परोपकार ईश्वर—भक्ति का ओर ले जाने वाले साधन है।

जिस प्रकार सूरज प्रकाश फैलाकर उ**ष्मा** देकर सब का कल्याण कर रहा है,, फूल खुशबू फैला कर सब के मन कों उल्लास से भर देता है, इसी प्रकार हम भी मानव बनकर इन्सानियत फैलाऐं। यही ईश्वर भक्ति है व यही असल कमाई है।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172—2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :—**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, **IFC Code - ICIC0006592**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

What is enlightenment?

Neela Sood

Enlightenment is attainment of true Knowledge. Knowledge is removal of ignorance. Ignorance can be removed by self-learning, by being aware all the time, by using the intellect to the core, by seeking, by query, by being guided and finally by the blessings of the one who is already enlightened.

This is a slow process when one moves from one level of consciousness to another. A small aperture through which light of knowledge enters expands suddenly and becomes a door through which it is possible to witness a person becoming wiser, perhaps a superhuman, offering a view of him never seen before. This is the elusive Self, one sought out and which suddenly becomes live, ready to talk to self. It takes one through depths of wisdom, love, compassion and benevolence. It reveals secrets of the universe and humanity, and truths of life and right way to live it and in the end embrace the death as happily as he enjoyed any other event of his life. The negatives in one die and positives start growing. The mind is without any jealousy, crookedness, over ambition, hatredness, arrogance, greed, attachment, lust and such other negativity of mind which one experiences in this mundane world. One's perception of family and country changes completely. He comes out of the narrow considerations of origin, language, race, caste, gender, religion and so many others which act as a wall between one man and the other. For him world is one family and entire humanity forms its members in the spirit of *vasudhevay katumbakam.* He comes to know that life lived with others is life.

Rare intellect and capacity to reason converted Moolshankar in to highly enlightened soul – Dayanand Saraswati

When one gets enlightened, it conveys that the seed of knowledge has been sown in him; the idea of knowledge has taken shape in womb of his mind. Now this seed has to grow in to a tree which is capable of giving shade and fruit to everybody." This is the real purpose of enlightenment.

A lit candle lights another candle. Similarly, only an enlightened person can enlighten another person. There is no other way. Fired by curiosity to know the truth, enlightenment is exponential and involves experimenting. There is no text book for it. Without an urge to know the truth, even Vedas can't give you enlightenment. There are many who have read Vedas many a times but are devoid of true enlightenment. They are good so far so to give discourses only. The real fruit of enlightenment is the removal of ignorance and fear, which is a great gift. Enlightened person has no fear. He had learnt to embrace death happily. He will speak only truth and nothing except the truth. At the spiritual level also, the more we shed our ignorance about who we are and our constitutional position in this universe, the closer we come to God, who is full and eternal enlightenment.

Last, enlightenment has no meaning if it is not used to enlighten other people. Then it is an oak tree which is huge but neither gives shade nor bears fruit. Light of knowledge has to be dispersed. It is incumbent upon the enlightened being to guide others selflessly. Whether Socrates, Buddha, Guru Nanak Dev or Maharishi Daynand, they were the true embodiment of enlightened souls and used their knowledge so obtained from enlightenment to remove the ignorance of others. Guru Nanak Dev when met Sidhas, he said, "Your being enlightened is all waste if you do not use it to enlighten others" **This is why, in one of the principles of Arya Samaj, Maharishi Dayanand said-----"Remove ignorance (avidya) and promote knowledge(Vidya) by enlightening otheres. This is true enlightenment.**

सम्पादकिय

सर्वव्यापक ईश्वर को ऐजेन्टों की आवश्यकता नहीं

वेदों मे ईश्वर को सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वान्तरयामी व सर्वशक्तिमान, अजन्मा, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्वीकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर,अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता बताया है, उसी की उपासना करनी योग्य है।–– अर्थात ईश्वर एक है जिसका न कोई आकार है न ही जन्म होता है, वह सब जगह विराजमान है, कण कण में समाया हुआ है, वह हमारे अन्दर भी है, बात सिर्फ अन्दर झांकने की है।

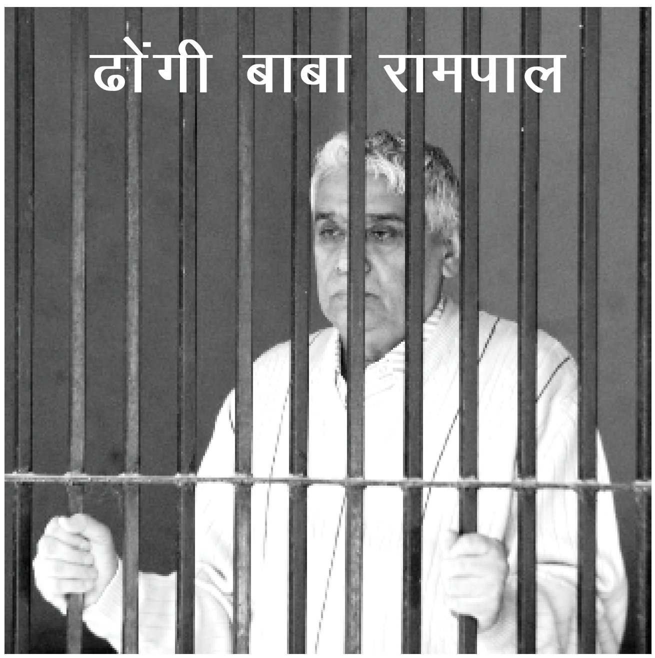

एक बात स्पष्ट है कि जब ईश्वर सब जगह विराजमान है और अनन्त है ऐसे में ईश्वर अपने ऐजेन्ट; (ये सब बाबा , बापू, स्वयं को भगवान कहने वालों) को क्यों रखेगा। ऐजेण्ट रखने की बात तो तब आये जब वह सब जगह न हो। न ही अनादि होने के कारण नश्वर शरीर में प्रवेश करेगा जैसा कि यह बाबा आदि अपने आप को ईश्वर ही बताते हैं।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि लोग इन ढ़ोंगी बाबों की तरफ क्यों भागते हैं? मेरे ख्याल से इस का मुख्य कारण है लोगों को ईश्वर के ठीक स्वरूप के बारे में अज्ञान, और ठीक ज्ञान देने वालों की कमी ।आज धर्म गुरू भी अध्यात्मवाद को कमाई का साधन मानते हैं और कमाई है कर्मकाण्ड में और पाखंडों में, ऐसे में ठीक रास्ता दिखाने वाले है ही नहीं। आर्य समाज जैसी संस्थाऐं जो किसी समय ऐसे अज्ञान को दूर करने के लिये बनी थी आज स्वयं कर्मकाण्ड और अन्धविश्वास का गढ़ हैं। जहां कभी मुददे थे एक निराकार ईश्वर की उपासना, अन्धविश्वासों और जातिवाद के विरूध युद्ध, अच्छे आचरण के लिये कटिबध रहना, वहां के आकर्षन है––भजन संध्या, योगा, संस्कृत प्रचार, बड़े बड़े हवन, विवाह संस्कार और एक दूसरे के अभिनन्दन। ऐसे में इन ढोंगी बाबों को खुली छूट है।

दूसरा कारण है हमारा कर्म फल के सिद्धान्त को समझ नहीं पाना। इस जन्म में जो भी हम कष्ट, तकलीफ देखते हैं वह हमारे बुरे कर्मो का फल होता है। यह बुरे कर्म हमने इस जन्म में किये हों या पिछले जन्म में। यह कर्म भोग कर ही खत्म होते है। श्री राम और सीता को वनवास काटना पड़ा, यही नहीं जब रावण के साथ युद्ध में लक्ष्मण मूर्छित हो जाते है तो श्री रामचन्द्र विलाप करते हुये कहते हैं––न जाने पिछले जन्म में मैने कौन से बुरे कर्म किये थे जिस कारण यह बुरा समय मुझे देखना पड़ रहा है। ईश्वर न्यायकारी है और वह सब को उनके कर्मो का उपयुक्त फल देता है। इन कर्मो को भोगे बिना खत्म करने की किसी के पास भी चाबी नहीं, चाहे आप किसी नदी में डुवकी लगायें या दान पुण्य करे या किसी भगवान के नाम की अंगुठी पहने । हा, इन अच्छे कर्मो का अच्छा फल आपको अलग रूप में मिलेगां । यदि आम व्यक्ति इस कर्म फल के सिद्धान्त को समझ जाता है तो इन ढोंगी बाबो के चक्कर में न आये। जो भी लोग इन बाबों के चक्कर में पड़े हुये मिलते है उन में 90% किसी जादू की पुड़िया के लालच में आते हैं जो कि उन के दुख को दूर कर देगी।

तीसरा कारण यह है कि हम यह भूल जाते है कि चाहे राजा हो या भिखारी सब का जीवन अच्छी–सुखद और बुरी– दूख देने वाली घटनाओं का मिश्रण है। पर न तो सदैव दुख रहता है न–ही सुख। हर रात के बाद दिन होता है पर रात की एक मुनियाद होती है। और दुख काटने के लिये सहनशीलता और

धैर्य की आवश्यकता है पर हम चाहते है कि कोई ऐसी जादू की चीज या मन्त्र मिल जाये जो कि हमारे दुख, मिन्टो सैकिंटो में खत्म कर सुख की घड़ियां ले आये। ऐसे में बहुत से लोग इन बाबाओं के पल्ले पड़ जाते हैं। जब गलती का एहसास होता है तब तक बहुत नुकसान हो चुका होता है।

कोई भी कहेगा ठीक ज्ञान के लिये गुरू तो चाहिये। यह बात सोलह आने ठीक है कि ठीक ज्ञान के लिये गुरू तो चाहिये पर जरूरी यह है कि हम ठीक गुरू का चयन बहुत सोच विचार और परख कर करें। मेरे ख्याल में सही गुरू वही है जो कि अध्यात्मिक हो, न कि भौतिक वस्तुओं के पीछे भाग रहा हो, धन संग्रह में लगा हो और जिसकी कोशिश यह हो कि असली भगवान की ज्रगह मैं ले लूं।

एक बार की बात है स्वामी दयानंद सरस्वती अचानक उस जगह दाखिल हुये जहां श्रद्धालु हवन कर रहे थे। स्वामी जी को देखते ही सब श्रद्धालु अपने स्थान पर उठ खडें हुये। स्वामी जी ने हवन समाप्त होने पर श्रद्धालुओं को समझाया––जब आप उस सर्वशक्तिमान परमात्मा की भक्ती मे लीन है तो मुझ जैसे नश्वर प्राणी के लिये उस की भक्ति छोड़ कर ऐसे खड़े हो जाना बहुत गलत है। ऐसा गुरू मिले तो धार लें।

संस्कृत को आवश्यक विषय बनाना गलत

जिस भाषा का व्यवहारिक जीवन में कोई उपयोग नहीं। न तो कहीं बोली जाती है न हीं अध्यापक की नोकरी के सिवा कोई नोकरी दिला सकती है, उस भाषा को, चाहे संस्कृत हो या दूसरी, C.B.S.E में आवश्यक विषय बनाना बिल्कुल गलत है। मैने संस्कृत पढ़ी, मेरे बच्चों ने भी पढ़ी, पर आज कोई एक संस्कृत मे लिखा पन्ना मेरे आगे रख दे तो वह मेरे लिये Greek है, कारण कहीं भी प्रयोग में नहीं। सरकार के इतने अधिक प्रयत्नों के बावजूद, आज संस्कृत समझने और बोलने वालों की संख्या 120 करोड़ जनसंख्या वाले देश में 10000 भी नहीं जब कि पढ़ने वाले करोड़ों में हैं। कारण वही भाषा पनपति है जो कि प्रयोग में हो। सरकार के प्रयत्नों से कोई भी भाषा विकसित नहीं हो सकती यह निर्भर करता है रूचि पर और आवश्यकता पर।

कोइ अगर कहे कि हमारे शास्त्र संस्कृत में हे इसलिये संस्कृत पढ़ो तो यह उचित नहीं लगता। हमारे सभी श्शास्त्रों के अर्थ दूसरी भाषाओं में उपलब्ध हैं उसके लिये संस्कृत पढने की कोई आवश्यकता नहीं। हमने कोई अर्थ थोड़े भी करने हैं। हमने शास्त्रों की बातों को समझ लिया, जीवन में धारण कर लिया यही बहुत है। जिसको इस विषय में रूचि हो, अध्यापक, पडित पुरोहित बनना हो या शोध करना हो वह पढ़ लेगा। आम व्यक्ति तो काम धन्धा चाहता है, उसके लिये वही विषय पढ़ाये जायें जो कि उसको नोकरी या धन्धा दिलाने में सहायता करें। 120 करोड़ जनसंख्या वाले देश में यह और भी सत्य है। लोग काम चाहते हैं। मेरी रिश्तेदारी में एक लड़की संस्कृत में Phd करते 37 साल की उमर तक 5000 की नोकरी के लिये भटकती रही। वह कहने लगी अगर मैने यही दसवीं के बाद जे–बीटी की होती तो कहीं अच्छी रहती। यह हाल उसी का नहीं औरों का भी है।बहुत से Phd करके दूसरे धन्धे करने पर मजबूर हो जाते हैं जो यह कहते हैं कि संस्कृत इसलिये पढ़ो क्योकि इस से शास्त्रों को समझने में आसानी रहेगी उन से मेरे तीव्र भेद हैं। जिस भाषा में एक ही शब्द के 300 से अधिक अर्थ हों उस भाषा का सहारा लेना मूर्खता है। यह तो और भी शंकाये पैदा कर रहा है। एक शास्त्री एक ही पक्तीं का एक अर्थ कर रहा है तो दूसरा अलग ही कर रहा है। आज जो हम इतने सारे पंथ, मत देंख रहें है वे इसी की देन है। जो हम एक हजार साल से भी अधिक गुलाम रहे वह भी इस भाषा के इस गुण की देन है जो हमारे समाज में इतनी कुरीतियां रही वह भी इस भाषा के इस गुण की देन है कि ऐक शब्द के 300 अर्थ निकलते हैं। हर एक पण्डित ने अपने अनुसार अर्थ निकालकर भोली भाली जनता को गुमराह किया। यही कारण है महान समाज सुधारक महात्मा फूले ने किसी भी संस्कार में संस्कृत का प्रयोग न करने का आदेश दिया। उनका कहना था कि शादी करवाने वालों को यह समझ ही न आये कि पडिंत क्या बोल रही है तो उसका फायदा क्या? आज आर्य समाज जैसी महान संस्था खत्म होने के कागार पर है वह भी इन संस्कुत प्रेमियों पर आर्य समाज को छोड़ देने का नतिजा है।

दिल्ली में बैठे जो लोग यह फजूल की मांगे करते है उनके अपने बच्चे विदेशों में डाक्टर, ईजिनयर I.A.S आदि होते हैं। संस्कृत में हजारों Phd हैं

पर कितनों को उन जैसी पोस्ट मिल जाती हैं। यह लोग दूसरों के भविष्य से खेलते है। अच्छा हो हम समझदार भारतीय वनें।

'A Nation builder' Sardar Patel, not Nehru

Maj Gen RS Mehta (retd)

I CRINGE when I hear our TV channels endlessly debate the 'politics' behind Sardar Patel's birthday celebrations. I cringe because there are times in the life of a nation when men and women rise so high in strengthening the idea of the nation that it sounds petty and disingenuous for anchors and panelists to play-act as poseurs and artlessly discuss what amounts to insinuation-laden, irresponsible social chatter about what was said or implied on the great man's birthday and by whom. Could there have been another narrative to discuss why Sardar Patel is worth the recall and across narrow political party interpretation? Let me share what I consider as two nation-building contributions by Patel-- both with strategic military connotations.

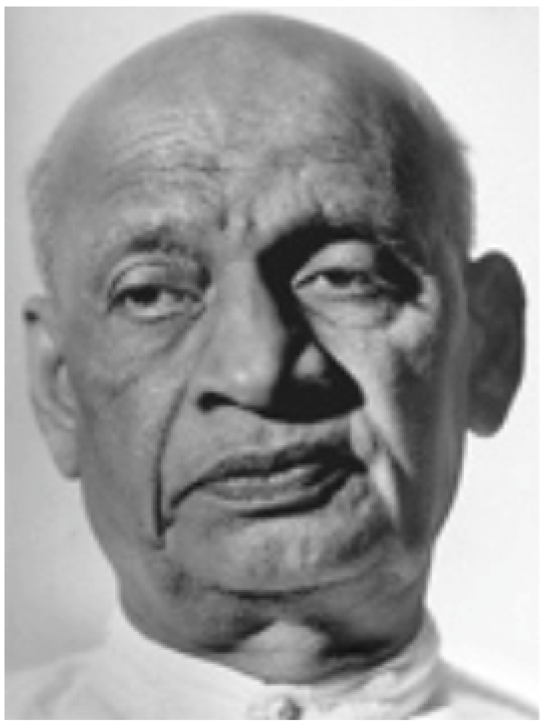

In early 1947, then Lt Col (later Field Marshal) SHFJ Sam Manekshaw was posted as GSO1 in Military Operations, the first Indian officer to be so nominated. Sam was about to move out in October 1947 to command 3/5 Gurkha Rifles when Pakistan invaded Kashmir. His posting was cancelled. On October 25, VP Menon, accompanied by Manekshaw, was dispatched to Srinagar with the 'Instrument of Accession' document. This was in response to Maharaja Hari Singh's frantic call for help on October 24. Menon and Manekshaw flew back to Delhi with the signed document, reaching at 4 am on October 26.

A Cabinet meeting was held shortly thereafter, attended by Nehru, Patel {Deputy PM/Home Minister), Defence Minister Baldev Singh, Mountbatten and others. Manekshaw, asked to explain the military situation, stated that with the Kabailis nearing Srinagar, urgent military intervention was needed because if Srinagar airfield was lost, Kashmir would be lost. Patel was all for immediate dispatch of troops but Nehru prevaricated, giving a rambling expose about the State's complex dynamics and why the UN must not see India as an aggressor.

Finally, Patel lost his patience and stated bluntly, 'Jawahar, do you want to save Kashmir or not?'

'Of course, I do', Nehru snapped.

Patel turned to Manekshaw: 'You have your orders. Carry them out'. The rest, as they say, is history. Patel's decisiveness and the Indian armed forces' effective response saved Kashmir for India.

The second citing of Patel's indisputable quality as an icon, which should be positioned above political 'ownership' polemics, relates to his November 7, 1950, DO letter to Nehru. In it he spelt out his superbly prescient appreciation of Chinese intent and how India should prepare itself to cope with this major threat to India's sovereignty. He laid out a ten-point assessment that included the need for an urgent appreciation of Chinese threats to India's external and internal security; the need for force accretion to face multi-pronged threats; infrastructure development; improving our relationship with the cis-Himalayan states (Nepal, Bhutan and Burma) and formulating a clear policy on McMahon Line.

Tragically, Nehru never replied and Patel died shortly thereafter on December 15, 1950. Today, we are still struggling to implement Patel's vision, which remains brutally relevant 64 years after Patel enunciated it. Can we not rise above narrow-minded rhetoric and, instead, celebrate Patel as an Indian icon above petty politics? That would be a far more constructive way of celebrating the Idea of India.

डायमंड किंग न सही, अपने कर्मचारियों के प्रति उदार व उत्तरदायी बनकर आप एक सचमुच का हीरा बन सकते हैं

सीता राम गुप्ता

पिछले दिनों दीपावली के अवसर पर देश के एक प्रतिष्ठित हीरा कारोबारी सावजी ढोलकिया ने अपने कर्मचारियों को गिफ़्ट के रूप में फ़्लैट्स, कारें व कीमती आभूषण देकर एक सनसनी सी फैला दी। इस पर कंपनी के मालिक का ये कहना कि ये सब कर्मचारियों की मेहनत के फलस्वरूप ही संभव हुआ अत्यंत स्वाभाविक है। किसी भी उद्योग अथवा सेवा के क्षेत्र की सफलता उसके कर्मचारियों की मेहनत, ईमानदारी, लगन व निष्ठा पर ही निर्भर करती है इसमें संदेह नहीं। यहाँ यह कहना भी अत्यंत प्रासंगिक है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। दुनिया में कोई ऐसा अरबपति या खरबपति नहीं जिसने अकेले के दम पर अकूत संपत्ति अर्जित की हो। हर उद्योग, व्यक्ति अथवा संस्थान के विकास, उन्नति व समृद्धि में असंख्य लोगों का प्रत्यक्ष व परोक्ष योगदान रहता है लेकिन कितने लोग हैं जो इस बात को समझते हैं और अपने सहयोगियों व कर्मचारियों के लिए वास्तव में कुछ विशेष करने का प्रयास करते हैं?

कहा गया है कि आप जिसकी पूजा या प्रशंसा करते हैं उसी जैसा बनिए। यदि आप कर्मचारियों को गिफ़्ट के रूप में फ़्लैट्स, कारें व कीमती आभूषण देने की घटना की प्रशंसा कर रहे हैं तो कोरी प्रशंसा की बजाय आप भी अपने सामर्थ्य के अनुसार वैसा ही बनने का प्रयास कीजिए क्योंकि तभी उस प्रशंसा की सार्थकता है। जब हमें कोई उपहार या सुविधा मिलती है तो हम बहुत ख़ुश होते हैं लेकिन क्या कभी हमारी वजह से भी किसी को ऐसी ही ख़ुशी मिली है इस पर कम ही विचार करते हैं। हर व्यक्ति एक बड़ा उद्योगपति या व्यापारी अथवा बहुत पैसे वाला नहीं हो सकता और न ही हर व्यक्ति के यहाँ बहुत से कर्मचारी ही होते हैं लेकिन हमारे स्वयं एक कर्मचारी अथवा सामान्य पेशेवर होने के बावजूद अनेक स्थायी अथवा अस्थायी व्यक्ति हमारे विकास से जुड़े होते हैं। उनके सहयोग के बिना हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते।

विकास व समृद्धि ही नहीं कुछ लोगों का जीवन व अस्तित्व तक अन्य लोगों के जीवन व अस्तित्व पर निर्भर करता है। क्या ऐसे लोगों की ख़ुशी के बारे में सोचना हमारा दायित्व अथवा कर्त्तव्य नहीं? हम जिन लोगों के सहयोग से लगातार आर्थिक उन्नति करते रहते हैं, साफ व स्वच्छ बने रहते हैं आख़िर वो ही क्यों ज़िंदगी भर हर तरह से बेबस व लाचार बने रहते हैं? क्यों उनके चेहरों पर कभी मुसकान नहीं दिखलाई पड़ती? पक्की छत तो दूर क्यों कभी उनके झोंपड़ों के छप्पर की मरम्मत तक नहीं हो पाती? दूसरों की उतरन के अतिरिक्त क्यों कभी नए कपड़े उनके तन पर सुशोभित नहीं होते? क्यों कभी वो अपने पैर के सही नाप का जूता नहीं ख़रीद सकते और हमेशा लंगड़ाते हुए से चलने को विवश होते हैं? क्यों उनकी चप्पलें हमेशा टूटी ही रहती हैं? इस पर विचार करने की ज़रूरत है। क्या हमारी उपेक्षा अथवा उदासीनता या दायित्वबोध में कमी ही तो इसका कारण नहीं?

Savji Dholakia

वैसे तो हममें से कई सामान्य व्यक्ति भी हज़ारों–लाखों रुपये दान–दक्षिणा में लुटा देते हैं लेकिन एक मजदूर को उसकी मजदूरी देने के मामले में हम बड़े हिसाब–किताब वाले बन जाते हैं। कार्य के दौरान कुछ नुक़सान हो जाने पर उसकी मजदूरी में से पैसे तक काट लेते हैं। हम हिसाब के बड़े पक्के होकर भी वास्तव में कच्चे ही होते हैं। हम अल्पकालीन लाभ देखते हैं दीर्घकालीन लाभ नहीं देखते। हम दो पैसे का फायदा देखते हैं ज़िंदगी का नहीं। हम भौतिक लाभ देखते हैं मानसिक संतुष्टि से उत्पन्न आध्यात्मिक लाभ नहीं। ये ठीक है कि हम हर आदमी पर दौलत नहीं लुटा सकते लेकिन जो लोग हमसे जुड़े हैं, हमारे कर्मचारी अथवा सहायक हैं कम से कम उनके जीवन में तो कुछ सुधार ला ही सकते हैं।

हम अपने सहयोगियों अथवा नौकरों को उनके कार्य अथवा सेवा के लिए पूरी मजदूरी अथवा वेतन के साथ–साथ अन्य सुविधाएँ दे सकते हैं। कीमती फ़्लैट्स, कारें व हीरे के आभूषण न सही लेकिन उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना, किसी भी प्रकार का रोग होने पर फौरन उपचार करवाना, उन्हें अच्छे कपड़े उपलब्ध करवाना, व उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना ऐसी कुछ बातें हैं जो हमें एक डायमंड किंग न

सही एक डायमंड ज़रूर बना सकती हैं। अगली बार किसी भी अवसर पर दान–दक्षिणा के रूप में नकारा लोगों पर पैसा लुटाने की बजाय वो सारी राशि अपने घर के काम करने वाले सहयोगियों अथवा नौकरों पर ख़र्च कर दीजिए। इससे आपको व आपके सहयोगियों अथवा नौकरों को जो ख़ुशी मिलेगी उससे ही आपके घर–परिवार को वास्तविक आध्यात्मिक लाभ मिल सकेगा। जीवन में संतुष्टि व अच्छे स्वास्थ्य के साथ–साथ आर्थिक समृद्धि भी सुनिश्चित हो जाएगी।

हीरे की तरह क़ीमती बनने के लिए ज़रूरी है मनोभावों की तराश

एक मूर्तिकार से उसके एक प्रशंसक ने पूछा कि वह इतनी सुंदर मूर्तियाँ कैसे बना लेता है। मूर्तिकार ने जवाब दिया कि मूर्ति तो पत्थर में पहले से ही मौजूद होती है। मैं तो केवल मूर्ति के ऊपर लगे अतिरिक्त पत्थर को हटाकर साफ कर देता हूँ। ठीक यही स्थिति मनुष्य की भी होती है। मनुष्य स्वयं में ईश्वर की एक अद्‌भुत कलाकृति है। जब मनुश्य की सोच विकृत हो जाती है तब वह ईश्वरीय कलाकृति दब जाती है। अपनी सोच को सही दिशा अथवा सकारात्मकता प्रदान करके हम पुनः ईश्वरीय कलाकृति में बदल जाते हैं।

जिस प्रकार एक कलाकार उचित प्रशिक्षण और निरंतर अभ्यास के द्वारा मूर्ति के ऊपर लगे अतिरिक्त पत्थर को हटाकर साफ करके एक सुंदर कलाकृति बनाने में कुशलता प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार हम भी उचित प्रशिक्षण और निरंतर अभ्यास के द्वारा अपने नकारात्मक भावों से छुटकारा पाकर प्रभावशाली व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। नकारात्मक भावों से छुटकारा पाने का अर्थ है सकारात्मकता का विकास।

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेश, अभिनिवेश आदि क्लेशों की समाप्ति अथवा नकारात्मक भावों से छुटकारा ही व्यक्ति की वास्तविक तराश है। इससे व्यक्ति के मन में हिंसा की समाप्ति होकर करुणा और मैत्री का विकास होता है और तभी उसका हृदय संकीर्णता का त्याग कर विस्तृत होता है, अधिकाधिक संवेदनशील बनता है। उसमें पारदर्शिता आती है और वह आकर्षक लगने लगता है। यही पारदर्शिता और आकर्षण उसे समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी और हीरे से भी क़ीमती बना देता है इसमें संदेह नहीं।

मानविय हीरे भी तराश कर ही बनते है ऋषि बाल्मीकि और लव–कुश

सीताराम गुप्ता ए.डी.
–106–सी, पीतमपुरा,
फोन नं. 09555622323
Email : srgupta54@yaahoo.co.in

श्री सीताराम गुप्ता एक जानेमाने लेखक हैं। उनकी बहुत सी पुस्तकें भी प्रकाशित हुइ हैं, जिस में ऐक पुस्तक को पढ़ने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यही नहीं दूरदर्शन पर उनके वार्तालाप सुनने का भी मझे सौभाग्य प्रदान हुआ। वैदिक थोटस का यह सौभाग्य है कि अच्छे व्यक्ति खुद ही अपने आप जुड़ते गये।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

''मित्र कैसा हो''

मनमोहन आर्य

यजुर्वेद 36/18 मन्त्र दृते दृम्ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।)

यजुर्वेद का यह मन्त्र मित्र कैसा हो'' का वर्णन कर रहा है। इस मन्त्र में ईश्वर प्रार्थना व विनय की गई है कि हे भगवन् मुझे स्थिर न रखकर गतिशील रखिये, क्रियाशील रखते हुए मुझे विद्या, सत्य, धर्म आदि शुभगुणों में सदैव स्वकृपासामर्थ्य ही से स्थित करो। मुझको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि तथा विद्या–विज्ञान आदि दान से अत्यन्त बढ़ाओं, मुझे सब प्राणी मित्र की दृष्टि से देखें, सब मेरे मित्र हो जायें, कोई मुझसे किंचिनमात्र भी वैर–दृष्टि न करें। मैं निर्वैर हो कर सब प्राणी और अप्राणी चराचर जगत् को मित्र की दृष्टि से अपनी आत्मा के समान, स्वप्राणवत् प्रिय जानू । अन्याय से वशीभूत हो कर किसी के साथ वर्ताव न करूं । वेदों में ईश्वर ने उपदेश दिया है कि वह सभी प्राणियों का मित्र है और उसका अनुकरण कर सब प्राणियों को एक दूसरे का मित्र बनना चाहिये।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में ईश्वर को **''इन्द्रस्य युज्यः सखा''** कहकर उसे मनुष्य आदि प्राणियों का सच्चा व योग्य मित्र कहा गया है। ईश्वर से बढ़कर मनुष्य व अन्य प्राणियों का कोई मित्र नहीं है। मित्रता व दोस्ती से सभीं को लाभ होता है व शत्रुता से सभी को हानि होती है। अतः हमें सबसे मित्रता करनी चाहिये और शत्रुओं को भी यदि मित्र बनाया जा सकता हो तो बनाना चाहिये। इतिहास में राम व सुग्रीव, कृष्ण–सुदामा तथा राम–विभीषण की मित्रता के उदाहरण से स्पष्ट है कि दो व्यक्तियों की मित्रता से दोनों को लाभ होता है। वहीं राम व रावण तथा दुर्योधन व पाण्डवों की शत्रुता से यह परिणाम निकलता है जो असत्य पर होता है, उसका विनाश हो जाता और सत्य विजयी होता है। मित्रता सत्य व्यवहार का प्रतीक है और शत्रुता असत्य व्यवहार का। सभी मनुष्यों को प्रतिदिन आत्म चिन्तन करना चाहिये और अपने हृदय से असत्य व शत्रुता के भावों को निकाल कर उनके स्थान पर प्रेम व मित्रता का भाव पैदा करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये।

हमारे शास्त्र कहते हैं–– जैसे हाथ शरीर की और पलकें आखों की रक्षा करती हैं ऐसे ही जो बिना किसी अपेक्षा के रक्षा करे उसे मित्र कहते हैं। पवित्र आचरण, मित्र के लिये त्याग की भावना, मित्र के सुख दुख और लाभ हानी में एक जैसा ही व्यवहार रखना, मित्र के साथ सदैव सत्य का ही आचरण रखना, ये अच्छे मित्र के गुण हैं।

गलत लोगों की मित्रता प्रातः काल की छाया के सामान होती है जो पहले लम्बी और जैसे दिन बीतता है छोटी होती जाती है। इसके विपरीत अच्छे लोगों की मित्रता सांयकाल की छाया के सामान होती है जो प्रारम्भ में छोटी और सूर्यास्त के बाद लम्बी हो जाती है।

किसी ने सत्य कहा है जब सारे लोग साथ छोड़ जाते हैं तो मित्र सहारा देता है।

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सम्पर्क करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगढ़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

Prayer is the best therapy

Bhartendu Sood

All of us face upheavals in life. There comes a time when one feels totally shattered, beleaguered and broken. Generally in such situations we are overtaken by anxiety and fear and crave to know when the time would change. We turn to the fortune tellers, tantricks, tricksters, pundits and other conmen. What is most paradoxical is that this behavior is not only confined to the illiterate but highly educated people too frantically look for a magic band or talisman to come out of the crises and their eyes open when incalculable harm is already done.

Sometime back I visited Amritsar where I was employed at one time. During normal enquiries about the old colleagues I was shocked when told that a staff cadre woman employee when developed a terminal disease married off her beautiful daughter to an aged tantrick on being assured by him that the wedlock would relieve her of that disease. The girl emotionally became ready to make sacrifice for her mother whose father found his wife' life more valuable than the future of his daughter. In the absence of right medication that woman died before time and the tantrick disappeared after leaving her daughter high and dry.

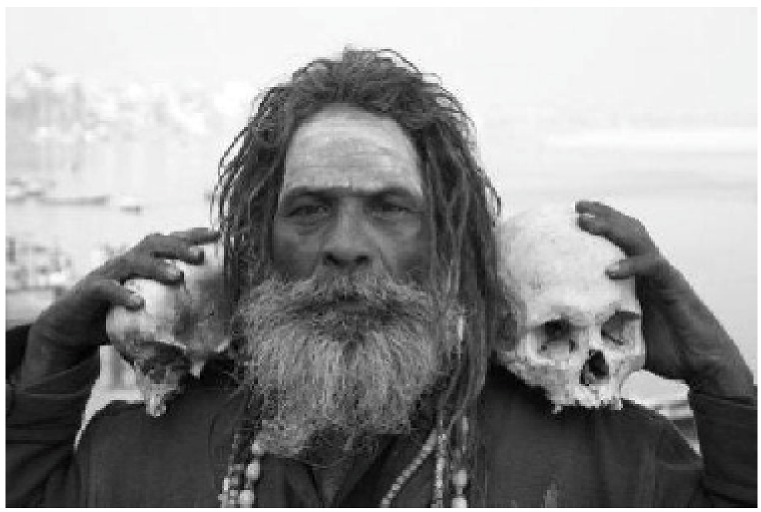

Why should it happen? There are two reasons. First being our failure to appreciate that life is a mixed bag of good and unfortunate happenings and it is true for every body whether a king or a pauper. Every night is followed by day but then night has also its duration. We fail to exercise patience, tolerance and the resistance in such moments of crises. Our mind is so closed that it looks at only closed doors though there are many doors which are open also. We don't look at those countless instances of the persons who after being in similar situations reemerged as a phoenix from the ash. Second reason is that we don't keep in mind that we are governed by the law of karma. We can't escape fruit of our deeds in this life and the previous life. Even the men of god like Rama and Sita had to spend fourteen years in exile despite being perceived as the rightful inheritor of the throne of Ayodhya.

What should be done under such situations? There is an urgent need to realize that God is great and there is no better resolver than Him. His ways and means to solve our problems are generally beyond our comprehension. Therefore the best therapy is to have belief in God, pray to Him. No other talisman gives as much strength as the honest and sincere prayer to the Almighty. But it has to be accompanied by the right line of action also. For example, it is the prayer which gives strength and shows the way but cancer can not be cured unless we do right medication in the hands of qualified doctor.

दिन भर काम करने के बाद
बेटा पूछता है, क्या लाये?
बीबी पूछती है, क्या बचाया?
पिता पूछते हैं, क्या बचाया?
लेकिन माँ ही पूछती है,
बेटा कुछ खाया?

सुखदा सरना

लोग कहते है कि दुख बुरा होता है,
जब आता है रूलाता है।
मगर हम कहते हैं दुख अच्छा होता है,
जब भी आता है कुछ सिखाता है।

धर्म और राजनीति

अम्बाराम सिद्धान्त शास्त्री

नेताओं का तो धर्म से कुछ भी लेना देना नहीं है क्योंकि उनका नारा है धर्म को राजनीति से दूर रखो परन्तु बिना धर्म के तो मनुष्य मृत समान ही है। पशु समान भी नहीं कह सकते क्योंकि पशुओं के पास भी स्वाभाविक धर्म परमात्मा प्रदत्त है। हाल ही मैं न्यूजनेशन में एक संन्यासी ने भी यही बात कहीं कि धर्म और राजनीति को साथ न जोड़ें। मैं कहता हूँ जो नेता यह कहे कि धर्म को राजनीति से अलग रखें उसे तो देश निकाला दे देना चाहिए क्योंकि भारत तो विश्व का धर्मगुरू रहा है यदि धर्म राजनीति में नहीं रहेगा तो राजनीति भी मृतक समान होगी। जैसा वर्तमान की राजनीति में देखा भी जा रहा है। महर्षि मनु महाराज मनुस्मृति में कहते हैं– **"वेद स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मन। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम।। मनु0 2/12 ।। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज इसका अर्थ करते हुए लिखते हैं अर्थात् श्रुति, वेद, स्मृति वेदानुकूल आप्तोक्त मनुस्मृत्यादि भाास्त्र., सत्पुरूशों का आचार जो सनातन अर्थात् वेद द्वारा परमेश्वर प्रतिपादित कर्म्म और अपने आत्मा में प्रिय अर्थात् जिसको आत्मा चाहता है जैसा कि सत्यभाषण ये चार धर्म के लक्षण अर्थात् इन्हीं से धर्माऽधर्म का निश्चय होता है। जो पक्षपातरहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्यागरूप आचार है उसी का नाम धर्म और इससे विपरीत जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहणरूप कर्म है उसी को अधर्म कहते है"।** नेताओं से यह पूछा जाना चाहिए कि उक्त धर्म का त्याग करके राजनीति चल सकती है यदि फिर भी वे कहते हैं हाँ चल सकती है तो समझ लेना चाहिए ऐसे नेता देश को घोरघने अन्धकार की ओर ले जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। ये देश की वैदिक संस्कृति और मानवता पर कुठाराघात कर रहे हैं। जैसा वर्तमान में हो रहा है। हाँ मत, मजहब, पंथ जो मनुष्यों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए बनाये हैं उन्हें राजनीति से दूर रखना चाहिए। मत, मजहब, पंथ किसी विशेष समुदाय, सम्प्रदाय के लिए धर्म हो सकता है। परन्तु यह सार्वदेशिक, सार्वभौमिक सार्वकालिक नहीं माना जा सकता है। अतः राजनीति से इन्हें दूर रखने में ही हितकर है। मैं समझता हूँ कि हर नेता को मनुस्मृति तो अवश्य पढ़नी चाहिए ताकि उन्हें धर्म अधर्म और राजधर्म के विशय में पूरी जानकारी हो सके। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज का दृष्टिकोण था कि अगर विभिन्न सम्प्रदाय मूल मानवीय धर्म (वैदिक धर्म)को स्वीकार करके चलें तो वे कुसंस्कारों और जड़ताओ से मुक्त होकर वैदिक मूल्यों पर प्रतिष्ठित रह सकते है और आपसी वैमनस्य से मुक्त हो सकते हैं। पर हर धर्म–सम्प्रदाय में निहित स्वार्थी वर्ग इतना प्रबल है कि वह महर्षि के दृष्टिकोण को न समझ सकता था और न उनके विचारों को मान सकता था। फलतः अनेक सम्प्रदायों के धर्मचार्यों ने उनके सुझावों को मानने से इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज भारत हजारों मत–मजहबों में बटने के कारण जनता भ्रम में है कि आखिर सच्चा धर्म कौन सा है? जरा सोचिए महाभारत काल से पूर्व हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई आदि साम्प्रदायिक मत–मतान्तरों का अस्तित्व कहाँ था? सर्वदा आर्य शब्द ही प्रयुक्त होता था। वेद का 'आर्य' शब्द जाति–वर्ण–काल या देश का वाचक नहीं है, वह गुणात्मक है। वेद के अनुसार धर्म का मुख्य उददेश्य समाज में समरूपता, सामनजस्य और भाईचारे की भावना उत्पन्न कर मानव समाज का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास करना है। मानव समाज के जीवन के हर क्षेत्र में विकास इस प्रकार से हो कि जिससे शिक्षा प्राप्ति से कोई वंचित न रहे, न कोई आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा रह जाये, न स्वास्थ्य सेवाओं का पूरा लाभ किसी को न मिल पाये। जीवन में श्रद्धा, तप, दया, परमार्थ, यज्ञ, दान, शान्ति, मित्रता, अभय एवं सौमनस्यम् आदि धारण करने का ही नाम धर्म है। इन सबसे भी बढ़कर परमात्मा के आलम्बन की आवश्यकता है।

ऐ संसार के लोगों! यदि विश्व में एकता चाहने का उद्देश्य और लक्ष्य है तो आइये परमात्मा की वाणी वेद की शरण में जाने का संकल्प लें। तभी संसार का कल्याण होगा। केवल वेद के द्वारा ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है, तभी अनेकता में एकता हो सकती है।

वेद सदन, महर्षि दयानन्द मार्ग, हिम्मतपुर मल्ला, हरिपुर नायक, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड,
मो0 ६५५७००४७६४

जैन धर्म की बहुत सी बातें वेदों से ली गई हैं और अच्छे आचरण के लिये प्रेरित करती हैं।

जैसे ही बरसात का मौसम आता है, जैन साधु और साध्वियां चार महीने के लिये अपनी यात्रा बन्द कर देते हैं और एक ही स्थान पर ठहर जाते हैं। जैन धर्म में इस चार महीने के समय को चातुर्मास कहा गया है। ऐसा समझा जाता है कि यह समय यात्रा के लिये ठीक नहीं होता। इस समय के दौरान जैन संत आम जनता को धर्म का पाठ देते हैं, जिनका मुख्य बिन्दु है पांच महाव्रत——सत्य पर चलना, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह; यानी कि उन चीजों का संग्रह नहीं करना है जो नहीं चाहिये या उतना ही संग्रह करना है जितना की चाहिये। जैन धर्म में संत और धर्म गुरूओं को यह आदेश है कि वह बाकी आठ महीने एक स्थान पर नहीं रूकेंगे और चलते ही रहेंगे। एक कस्बे से दूसरे कस्बे में और एक गांव से दूसरे गांव को ताकि उन में किसी स्थान या लोगों से आसक्ति न हो जाये। जो लोग यह धर्म पाठ ग्रहण करते हैं उनसे

यह अपेक्षा की जाती है कि वह जप एवं तप करें और ब्रह्मचर्य का पालन करें। ब्रह्मचर्य का जैन मत में बहुत महत्व है। इसके अलावा जो भी जैनी हैं वे इस समय अपनी धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। इन धार्मिक पुस्तकों में यह बताया गया है कि जीवन को सत्य, ईमानदारी और पवित्रता के साथ कैसे जिया जाये। एक बात स्पष्ट है कि आचरण का बहुत महत्व है चाहे वह धर्म गुरू है या फिर जैन धर्म को पालन करने वालां।

भगवान महावीर ने नारी की प्रतिष्ठा पर विशेष बल देते हुये उसे आध्यात्मिक साधना का स्थान पुरूषों के सामान दिया है। वे सामाजिक समता के प्रबल प्रतिपादक थे। जन्म, जाति, लिंग, व्यवसाय तथा समानता विषमता के आधार पर ऊच नीच का भेद नहीं हो सकता। उनका कहना है कि बिना आत्मशुद्धि के अग्निहोत्र और बाहरी क्रियाऐं आडम्बर है । ये बात सही भी है।

जैन धर्म में उपवास पर बहुत जोर दिया गया है। उपवास शब्द का अर्थ है आत्मा के निकट रहना। जैन धर्म में यह विश्वास किया जाता है कि उपवास करने से इस जन्म के और पिछले जन्म के पाप मिट जाते हैं जो कि वैदिक विचारधारा से मेल नहीं खाता। वैदिक विचारधारा के अनुसार कोई भी अच्छा या बुरा कर्म भोग कर ही खत्म होता है। हां, यह सत्य है कि तप और उपवास से पाप का बोद्ध अवश्य होता है जिससे व्यक्ति के आगे के कर्म सुधर सकते हैं यदि वह इस के लिये दृढ़ संकल्प करे। खैर, इस में कोई दो राय नहीं कि उपवास से आत्मा और शरीर दोनों शुद्ध होते हैं।

मैं आर्य समाजी हूं। मुझे देश के अलग–अलग कोने में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस दौरान बहुत से जैनी मेंरे सम्पर्क में आये। मैने उनके जीवन को देखा, परखा और उनसे प्रभावित भी हुआ। कया हैं वे बातें,

1 बहुत ही अनुशासित जीवन, खासकर खानपान, उठना बैठना और सोना जागना, जिस कारण उनकी सेहत अच्छी रहती है और लम्बी आयु जीतें हैं।

2 धर्म और उस से लगे हुये धर्मकाण्ड को बहुत तनमयता से निभाते हैं। जो कि हम हिन्दुओं में नहीं है। हम में, जिस में आर्य समाजी भी आते है, अपने धर्म को मनोरंजन का रूप दे दिया है, जो कि हिन्दु धर्म का बहुत नुकसान कर रहा है। भक्ति और धर्म दोनों जीवन के लिये आवश्यक हैं परन्तु दोनों का समय और स्थान अलग हैं। जब इन को मिलाया जाता है तो धर्म खत्म हो जाता है। उपदेशक मंच ग्रहण कर चुका है और

शेष पृष्ठ 13 पर

REMEMBRANCE

Kaviraj
Dr. B.N. Gupt (Sood)
1923-1999

Our tributes to our father who while meeting parental obligations had the capacity to give time for the social causes and had a expanded vision of family. Perhaps that's why he lived a better life.

Bhartendu Sood and family 231/45-A, Chandigarh.
0172-2662870

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

- **Walking with a friend in the dark is better than waling alone in the light**
- **Two roads diverged in the wood, and I took the one less traveled by, and that made all the difference**
- **Never open the door to a lesser evil; for other and greater ones invariably sink in after it**

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

पृष्ठ 12 का शेष

आवाज आती है फलां गायक का एक भजन और इस बात का सूचक है कि उद्देश्य मनोरंजन है न कि विचार। ऐसा हमारी आर्य समाजों में आम हो गया है।

3 जो बात सब से अधिक प्रभावित करती है वह है उन में साधु–संतो व धर्म–गुरूओं का बहुत ही त्यागमय और तपस्वी जीवन। धन के मोह व लोभ से वे दूर हो कर बहुत ही तप का जीवन काटते है और ऐसा जीवन होने के कारण जैन लोग उनका बहुत ही आदर करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आचरण को सब से अधिक महत्व दिया जाता है। जो उपदेशक, साधु, संत, धर्म–गुरू, तपस्वी, त्यागी लोभ से दूर नहीं चाहे वह कितने भी कुशल वक्ता हों या मधुर आवाज वाले हों उन्हें समाज में स्थान देना समाज को खत्म करना है, जैसा कि आज हमारे हिन्दु धर्म और आर्य समाजों का हाल है।

अच्छा होगा यदि हमारे उपदेशक, साधु, संत, धर्म–गुरू अपने आचरण पर ध्यान दें व उसे महत्व दें। जो त्यागी व तपस्वी नहीं है वह इस के योग्य नहीं है चाहे वह कितना शुद्ध मन्त्र बोले या मन्त्रों के अर्थ करे। कुछ लोग प्रश्न करेगें कि अगर वे दक्षिणा नहीं लेंगे तो उनका जीवन कैसे चलेगा। इसका जवाब यह है कि धर्म प्रचार के काम में आये ही वही जिसकी बाकी जीवन की आवश्यकतायें पूरी हो गई हैं, वही प्रचार के योग्य है। यही बात महात्मा श्रधानंद ने कही थी। यह जो प्रोफैशनल प्रचारक हैं यह प्रचार कभी नहीं कर सकते हां कर्मकाण्ड और भीड़ इकट्ठी कर सकते हैं। वह भीड़ तो पंजाव के किसी गांव के गायक को भी बुला कर कर सकते हैं। पर आपका असली मकसद तो प्रचार था जो कि वैसे ही रह गया।

दीपक वहां जलायें जहां अन्धेरा है के अन्तरगत सत्संग

21 दिसम्बर, ऐतवार के दिन गांव मुवारिकपुर, डेराबसी में मैने अपने माता पिता की याद में सत्संग का आयोजन किया है

समय------11 A.M to 1PM (दो घंटे)
घ्यान------5 मिन्ट।
सन्धया अर्थ सहित----- 15 मिन्ट --श्री नीरज कोहड़ा।
प्रार्थना मन्त्र अर्थ सहित---10 मिन्ट-- श्री नीरज कोहड़ा।
आर्य समाज के नियम----5 मिन्ट---नीला सूद, प्रियम्बिका।
भजन------------5 मिन्ट--कोई भी श्रद्धालु या सभी मिलकर।
वेद उपदेश---------30 मिन्ट --श्री हरि किशोर।
विचार--हम और हमारे बच्चे आर्य समाजी कैसे रहें?--30 मिन्ट -- भारतेन्दु सूद।
अध्यक्षिय विचार----श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग----15 मिन्ट।

लंगर

सभी आदर आमन्त्रि हैं

स्थान मेन रोड (Highway) पर है--पहले दिल्ली वाले रोड पर आये, भांखरपुर (जहां से डेराबसी का फलाईओवर शुरू होता है) वहां से वायें घूम जायें, 500 गज पर रेलवे करोसिंग है, उसको पार करते ही सत्संग का स्थान है। जो पंचकुला से आयें वे रामगड़ से अम्बाला रोड पकड़ लें, मुवारिकपुर बस सटाप से 50 गज पर सत्संग का स्थान है। चंडीगढ़ से 34 नम्बर बस वहीं आती है। पंचकुला से अम्बाला वाली हर बस मुवारिकपुर बस सटाप पर रूकती है।

और जानकारी के लिये सर्म्पक करें-01-.2662870, 9217970381

निवेदक--- नीला सूद व भारतेन्दु सूद

बाबा रामदेव को Z सिक्युरटी देना गलत

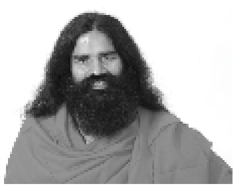

अरबपति उद्योगपति बाबा रामदेव को आम आदमी पर बोझ डाल कर Z सिक्युरटी देना बिलकुल गलत है। इतने अमीर व्यक्ति को जिसकी आय करोड़ो में है अगर असुरक्षित महसूस करता है तो अपने खर्च पर सिक्युरटी रखनी चाहिये। चाहे रामपाल है या रामदेव या कोई और बाबा सरकार को अपने आप को इन से दूर रखना चाहिये।

लम्बी दौड के विश्व प्रसिद्ध धावक Stanley Biwott शाकाहारी हैं

आप को शायद यह जानकर हैरानगी हो कि केनीया के मैराथन धावक Stanley Biwott शाकाहारी है। उनका मुख्य खाना है मक्का और दूध

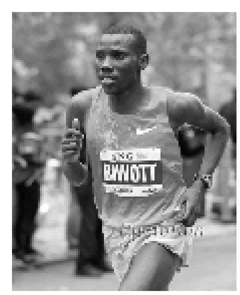

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

सामाजिक विकलांगता

अशोक कुमार

सरल भाषा में विकलांगता का अर्थ अंगहीनता, बुद्धिहीनता, असमर्थता, आयोग्यता, अक्षमता, असहाय आदि। कुछ का कहना है कि जब शरीर अकार्यशील हो जाये तो वह विकलांगता कहलाती है यह तो प्रभु का अभिषाप है। जीवन उनका चुनौती, पठार सम्मान होता है, सहानभुति का पात्र होता है। दुखः पीड़ा का पुतला - कुल मिलाकर वह अपूर्ण होता है। यह तो हुई व्यक्तिगत विकलांगता पर अक्सर समुदायों, संस्थाओं, परिवारों में सुना जाता है कि हम तो तुम्हारे बिना विकलांग हो गए, संस्थाओं में संगठन, ऐकता, सहमति खत्म हो गए। समुदायों में जब मर्यादा, शिष्टाचार भंग हो जाये, संकल्प, आस्था, सार्थकता, दिव्यता कमजोर हो जायें, सत्ता नियंत्रण के लिए हतकण्डे बलवान हो जाये, सिद्धांतों का निरादर होने लगे जो इसे हम सामाजिक विकलांगता ही कहेंगे।

आज समाज इस लिये विकलांग हो रहा है क्योंकि आज अधिकतर समाज में सुख भोग, संग्रह प्रवृति, स्वप्न अवलोकन का जीवाणु तीर्व गति से शक्तिशाली हो रहा है और लालसा वृद्धि हो रही है, परिणाम स्वरूप, समाज का स्वरूप परिवर्तित हो रहा है। ऐसे में मनुष्य उदासीन लग रहा है, असन्तुष्टि नृत्य कर रही है, सहयोग, सहायता नामक रासायन समाप्त हो रहा है, परिवार टूट रहे हैं, संयुक्त परिवार एकल्य परिवार में आ रहे हैं। अरे! अब तो जीवित-संबंध-स्थापना का दौर चल पड़ा है, समाज बिखरने लगा है, परिवार संबंधों में गरीमा गौरव उड़ रही है, पीड़ियां-प्रौढ़ता-परम्पराऐं बर्बाद हो रही हैं, छोटे-बड़े रिश्तों में तीखापन आ गया है, सांस्कृतिक पर्व-व्रत जो एक जुटता प्रदान करते थे, जो स्वभाव विरासत बंधनों को शक्ति देते थे, वे भी कमजोर पड़ रहे हैं। वैर-भाव योग प्रचण्ड हो रहा है, साधन साधु योग बदनाम हो रहा है, समाज सेवा ज्ञान सतसंग योग का अभाव हो रहा है, आदमी परेशान है, रोटी का फिक्र है, जनसंख्या बढ़ रही है, कर्मयोग, ज्ञानयोग, प्रेरणायोग, प्रभु योग का अभाव प्रफुलित हो रहा है। संवेदना समाप्त हो रही है, नारी का सम्मान-समानता शक्ति तो बढ़ रही है, पर उसकी शरीरिक प्रदर्शनता में पूर्ण अभदर्ता, अश्लीलता बढ़ रही है । मानवता का कल्याण नहीं, कत्ल हो रहा है, रात्रि बाजार, डांस बार सज रहे हैं।

आज समाज में आतंक का रावण विशाल हो गया है, खण्डता, अपमान मशाल बन रहे हैं, स्वतंत्रता बस नाम की है, न जाने कब उत्पीड़न, बलात्कार, अपहरण फिरौती का समाचार आ जाये। अबला अजमत बचा रही है, वासनाऐं उन्नत हो रही हैं, सतसंग, संस्कार, संस्कृति, साहित्य, स्मृतियां बन गईं है। 'मैं' 'मेरा' तत्व बढ़ गया है, 'हम', 'सब', 'हमारा', का चलन नाम का रह गया है। वृद्ध बेसहारा हुए, अब नवजात भी कहीं अज्ञात हो गये, पढ़ने-खेलने की आयु में अनाथ हो गए, अनाथघर भी अब बदनाम हो रहे हैं, दयालुता की किरणें स्वार्थ से भीगी पड़ी हैं,कहीं-कहीं शिक्षक भी नैतिकता भूल बैठ हैं। पड़ौसी रहस्य बन के रह गया है, बागों में कृत्रमिक हंसी शिविर लग रहे हैं, भ्रष्टाचार, कर्म योग पर भारी पड़ गया है, प्रभु आस्तित्व-स्वीकारता प्रश्न बन गई है ऐसे में निर्माणता होगी कैसे? स्वच्छ समाज प्रदूषित हो रहा है। यह विकलांगता नहीं है तो ओर क्या है?

आज हर सभा गोष्ठि में अक्सर जिक्र होता है कि सांस्कृति-साहित्य खत्म हो रहे हैं, रामायण शिक्षाऐं रामायण में बंद हो गई हैं, समाज सेवा स्वार्थ पर खड़ी हो गई, नवीन ज्ञान वृद्धि यंत्रों ने मानव को प्रकृति से दूर कर दिया, मशीन के सम्मुख बिठाकर दूसरी मशीन बना दिया। धर्म भी वाद-विवाद हुए, साम्प्रदायिकता का प्रसार हो रहा है। यह विकलांगता नहीं है तो ओर क्या है? सुख-दुख बांटने का चलन सीमित हुआ। धनवान, बलवान की चाहत ने जल, जमीन, जंगल का खनन किया। मनुष्य केवल अपने लिए जी रहा है, आज जीवनशैली बदल गई है, इन्द्रियां बलवान हो रही है, क्लेश रोपण हो रहा है, दया समाप्त हो रही है, अगर, है तो स्वार्थ या आत्म प्रशंसा से लिप्त है। अधिकतर दानव संख्या बढ़ रही है। आज कितने स्वामी विवेकानन्द, कैलाश सत्यार्थी, सावित्रि फूले बन रह हैं। आज मानव प्रवृतियों का

स्थान पिशाच प्रवृतियां ले रही है, साधु-संत स्वामी बदनाम हो रहे हैं। विकलांगता नही तो ये क्या है?

तो कैसे करें विकलांगता को दूर करें? प्रथम, शुद्ध, उन्नत, सोच प्रवृतित करनी होगी, विकासशील विचार रचने होंगे, अध्यात्मिक गुणवता अपनानी हो गई। दूसरों में अपना प्रतिबिम्ब देखना होगा। आवश्यकता से अधिक, सदा तनाव का कारक है। वैसे ही समृद्ध बनें जिन्होंने एक वस्त्र से तन ढका, पक्षियों की तरह वर्तमान में जीये, स्वयं की पहचान कर, संशय, भ्रम के अंधकार से निकले। किसी ने सत्य कहा है कि मिल बांटकर खाओ, अपने अधिकारों को भी बांटो और स्वयं को भी बांटने का योग भी धारण करो। स्वंय सोच छोड़नी होगी, नवीनता अपनानी होगी, जिन लोगों ने समाज के लिए सोचा व धरातल पर रहे, त्याग का वस्त्र ओढ़ा, जनहित प्रमुख रखा, स्वयं को धन, बल, सत्ता, प्रशंसा से पृथक रखा, समाज संगठन अखंडता के लिए जिज्ञासा रखी, यत्न प्रयत्न के योग को अपनाया और एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए दिशानिर्देश दिये। उनको अपना प्रेरणस्रोत बनाना होगा जिसे समाज विकसित तो हो पर जाति, धर्म, क्षेत्रवाद से हटकर हो। अलगाव-वाद के संस्थाओं को नष्ट करना होगा, ऐसा कल्याणकारी गणित रचना होगा, जिससे मानवता समृद्ध हो, न्यायिक प्रणाली पारदर्शी हो। धर्म-ग्रथों का अनादर न हो, ऐसी बने सोच, हर मनुष्य समाज के लिए करे यत्न-प्रयत्न का योग। जहां न होए आलोचना कन्या जन्म की, ऐसी रोक लगानी होगी ताकि कोई गजनवी न लूटे समाज को। समाज विकलांगता का जीवाणु पैदा ही तब होता है जब मनुष्य काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार का आहार करता है जिससे लालसा सदैव बढ़ती है। एक दिन ऐसा आता है जब इनको हज़म करना कठिन हो जाता है, फिर अधर्म, अनैतिकता का सालन खाना पड़ता है, अशुद्ध विचारों का जल पीना पड़ता है, तृप्ति तो फिर भी नहीं होती। सामाजिक विकलांगता तो बुद्ध-नानक के दिये आदर्शों को अपना कर समाप्त होगी। चाणाक्य ने सत्य कहा है, कर्म जैसा हो समाज उससे प्रभावित होता है, स्वभाव आचरण, व्यवहार, सोच ही सामाजिक संतुलन बनाते हैं। पूरी के शंकराचार्य का कहना है कि मंदिरों में दलितों को प्रवेश नहीं करने देना चाहिए। अगर विश्लेषण करें कि समाज में जिन संतों पर समाज का अध्यात्मिक पथ प्रदर्शन, मार्ग-दर्शन का दायित्व है, वह किस कालखण्ड में जी रहे हैं, तो ऐसी मानसिकता समाज संगठन में एक अवरोधक है, एक कलंक है, भारतीय धर्म-ग्रंथ इस पक्ष में नहीं है। जब धर्म, जाति जीवन का हो सम्मान, फिर कैसे होगा समाज विकलांग।

प्राकृति हमें दयालु बनने का संदेश देती है।

एक बार की बात है, चीन देश के एक महात्मा को ज्ञात हो गया कि अब उनकी मृत्यु बहुत पास है। उनके सभी चेले उनके पास बैठ गऐ और उनके आखरी शब्द सुनने के लिये आतुर नजर आये।

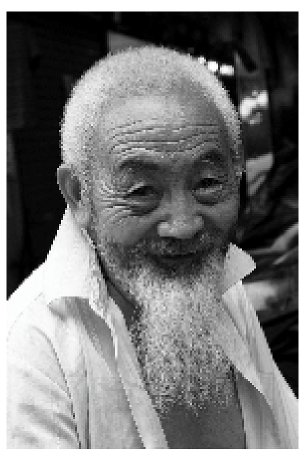

जब वहुत प्रतिक्षा के बाद भी वह कुछ न बोले तो उनके श्रद्धालुओं ने उनसे प्रार्थना कि वह उन्हें इस संसार से विदा होने से पहले कोई संदेश देकर जायें। महात्मा चुप रहे, फिर कुछ देर बाद अपने एक चेले से कहा कि वह उनका मुंह खोल कर देखे कि अभी तक उसके कितने दांत है? चेले ने मुंह खोला और बोला––गुरू देव, दांत तो एक भी नहीं है।''

महात्मा ने फिर से मुंह खोला और बोले––देखो क्या जीभ है? शिष्य ने देखकर बोला––हां गुरू देव, है।

महात्मा ने सभी शिष्यों को पास में बिठाया और बोले––देखों जीभा जन्म के समय भी थी और अब जब मैं मृत्यु के नजदीक हूँ तब भी है। जब कि दांत जन्म के कुछ समय बाद आये थे और मृत्यु से पहले ही चले गये है। बताओ इस का क्या कारण हो सकता है। कोई भी शिष्य इसका जवाब नहीं दे सका। तब महात्मा बोले––इसका कारण यह है कि जीभा नरम है इसलिये अपने स्थान पर बनी हुई है जब कि दान्त सक्त हैं इस लिये उखड़ गये है। इस लिये जीभा की तरह सदैव नर्म रहें ऐसा करने पर आप लम्बे समय तक कहीं भी बने रहेंगे और दान्त की तरह सख्त न बने आप स्वयं ही उखड़ जाओगे। प्रकृति हमें यही संदेश दे रही है।

उस महात्मा की बातों में एक सच्चाई छिपी हुई है। यदि हम विनम्र रहेंगे तो अपने सर्म्पक में आने वालों का दिल जीत लेंगे, अधिक मित्र बनेंगे और जीवन अधिक रूचिकर होगा। इसके विपरीत, सब योग्यतायें होते हुये भी अगर हम कठोर स्वभाव के होंगे तो शायद हमारे चाहने वाले भी हम से दूर ही रहेंगे। विनम्रता एक बहुत बड़ा गुण है और यह मुश्किल परिस्थितियों में भी व्यकित का रास्ता आसान कर देती है।

आठ ऐसे गुण जो मनुष्य के व्यक्तित्व को निखार देते है।

महाभारत काल में कौरवों के महामन्त्री विदुर जिने महात्मा कहकर सम्बोधन किया जाता था अपने राजा धृत**राष्ट** को कुछ ऐसी बातें बताई जो कि व्यक्ति को धार्मिक आचरण की और ले जाती हैं। इन सभी बातों का संकलन विदुर निती में है। महात्मा विदुर को यह बातें तब बतलानी पड़ी जब उन्होने देखा कि उनके राजा धृत**राष्ट** पुत्र मोह में फस कर धर्म को

भूल चुके हैं। महात्मा विदुर के चरित्र का अनुमान आप इसी बात से लगा सकते हैं कि जब उनके राजा धृतराष्ट ने उनके द्वारा दिये गये सुझाव ठुकरा दिये तो उन्होने इतने बड़े सामराज्य के मन्त्री पद को ठोकर मार दी न की मनमोहन सिंह की तरह अपमानित होकर भी लगे रहे। महात्मा विदुर ने जो आठ बातें बताई और जिन बातों का संकलन विदुर निती में है, वे उस प्रकार है।

महात्मा विदुर ने जो पहली बात बताई वह है बुद्धिमता। वुद्धि में ही विवेक का वास होता है। जहां विवकेशीलता होती है वहां गलत कार्य या फिर गलत निर्णय की सम्भावना नहीं होती। दूसरा गुण है 'कुलीनता' कुलिनता का सम्बन्ध किसी उच्च घराने से नहीं, इसका अभिप्राय यह है कि व्यक्ति के आचरण में शालीनता होनी चाहिये। उस में दूसरों के प्रति आदर और विनम्रता हो। एक साधारण परिवार में पैदा हुआ व्यक्ति भी अच्छे आचरण वाला हो सकता है जब कि एक उच्च घराने में पैदा हुआ व्यक्ति अगर अच्छे संसकार न मिले तो खराब आचरण का हो सकता है।

तीसरी बात जो महात्मा विदुर ने बताई वह है 'दम' अथार्त खराब और नकारात्मक प्रवृतियों को शमन करने की शक्ति। वास्तवितका यह है कि दम एक ऐसा गुण है तो कि बहुत अभ्यास के बाद ही व्यक्ति में आता है, पर यह मनुष्य को देवत्व की और ले जाता है। ऋ**षि** पतंजली का अष्टांग योग है ही गलत प्रवृतियों को शमन कर समाधी––अथार्त परम आन्नद की और ले जाने के लिये।

अगली बात जो महात्मा विदुर ने कही है वह है ' श्रुत' जिसका अर्थ है शास्त्र ज्ञान। शास्त्र ज्ञान का साधन है स्वाध्याय और अच्छे लोगों, विद्वानों की संगती अर्थात सत्संग। विवके का स्रोत ठीक ज्ञान है। अच्छे व बुरे कर्मो के पीछे हमारा ज्ञान व संस्कार काम करते हैं, कर्मो को प्रवृत करने वाला ज्ञान है।

ज्ञान में त्रुटि आते ही कर्म व उपासना में त्रुटी आ जायेगी। इसलिये व्यक्ति के लिये सत्संग बहुत आवश्यक है। सत्संग के साधन है अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय, अच्छे व्यक्तियों की संगती व उनकी बातों को सुनना व मनन करना ईश्वर भक्ति––जिसका सीधा अर्थ है ईश्वरीय गुणों को धारण करना।

पांचवा गुण है पराक्रम अर्थात साहस। यदि **मनुष्य** में साहस नहीं है तो विघ्न वाधाओं में उसके बाकी गुण भी काम नहीं आयेंगे। पराक्रम केवल बाहुबल का ही परिचायक नहीं, यह व्यक्ति की आत्मिक शक्ति का भी द्योतक है और धैर्य, सहनशीलता और आत्मविश्वास इसके अभिन्न अंग है। पराक्रम के बल पर ही योद्धा रण में विजयी होते है। पर पराक्रम वही प्रशसनिय है जिस में मनुष्य धीर रहता है और धर्म को नहीं छोड़ता।

महात्मा विदुर ' विदुरनीति' में आगे जिस गुण की बात की है वह है वाणी पर संयम, कहते हैं वयक्ति का अपनी वाणी पर संयम होना चाहिये। मितभा**षी** होना बहुत बड़ा गुण है If speech is silver then silence is gold व्यकित को यह पता होना चाहिये कि कब, कहां क्या बोले और कितना बोले। व्यर्थ का बोलना छिछोरेपन की निशानी है। मितभा**षी** होने के लिये व्यक्ति इन पांच दो**षों** से बचे––वाणी की कटुता, चुगली करना, झूठ बोलना, आप्रासंगित बोलना, बिना आवश्यकता के बोलना

विदुर जी ने सातवा गुण **'दान'** बताया है। जब यक्ष युधिष्टर से पूछते हैं कि मरने वाले का मित्र कौन है, तो युधिष्टर उतर देते हैं––''हे यक्ष दान ही वह मित्र है जो मरने वाले के साथ जाता है।'' यही नहीं देने वाले को देवता कहा गया है। लेने वाले से देने वाला कहीं बड़ा है। The hand that gives is greater than the one that takes. There is a grandeur in giving, a quite dignity in being helpful to the needy. **यह है** दान की महिमा। वेद में भी कहा गया है सैंकड़ो हाथों से धन कमाओ और हजारों हाथों से दान करो। अर्थात धन कमाने का तभी पुण्य है जब हम दान भी **दें।** धन की तीन गतियां होती हैं––दान, भोग और नाश। जो धन का दान व भोग नहीं करता व केवल संग्रह करता है, उसकी तीसरी गति नाश होती है। गीता में श्री कृ**ष्ण** कहते हैं––यज्ञ, दान तप मनु**ष्यों** को पवित्र व पावन बनातें हैं। श्रद्धा एवं सामर्थ्य से दान के ठीक स्वरूप को जानकर, दिया गया दान लोक परलोक दोनों में ही कल्याण करने वाला होता है। इस के विपरीत जब दान के भाव को छोड़ कर मन में धन संग्रह कर प्रवृति जागृत हो गई तो समझो आप ने पाप और अधर्म के लिये घर की खिड़की खोल दी।

आठवां गुण महात्मा विदुर ने कृतज्ञता का भाव बताया है। कृतज्ञता एक दैविक गुण है। कृतज्ञता श्शब्द का सीधा अर्थ है उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते रहना जिनसे हमें जीवन में कुछ भी प्राप्त होता है। वेदों के अनुसार जिन तीन का हर **मनुष्य** को हर समय कृतज्ञ रहना चाहिये वे हैं–– **सृष्टि** का रचईता व सब का पालनहार ईश्वर, दूसरा, माता पिता जो कि हमे जन्म देकर पालन **पोषण** करते हैं व तीसरा, हमें जीवन का रास्ता दीखाने वाला गुरू।जब हम **सृष्टि** के रचईता व सब का पालनहार ईश्वर के कृतज्ञ हो जाते हैं तो स्वभाविक तौर पर सब के कृतज्ञ हो जाते हैं क्योंकि बाकी सब कृपा के पात्र जैसे कि माता पिता, गुरू, मित्र, अच्छा जीवन साथी, अच्छी संतान इत्यादी भी प्रभु की असीम कृपा से मिलते हैं। अर्थात कृतज्ञता का अर्थ यह हुआ, '' प्रभु व उसकी असीम कृपा से प्राप्त वस्तुओं के प्रति सन्तो**ष व आभार।''**

दुनिया के महानतम वैज्ञानिक आईस्टीन की जब भी कोई प्रशंसा करता था तो वह बहुत विनम्र भाव से उन से पहले हुये वैज्ञानिकों का धन्यवाद करते जिनके किये हुये काम को आधार बना कर वह आगे बढ़ सके। यह है कृतज्ञता।

कृतज्ञता की अनुभूती का सब से सुन्दर परिक्षण हम अपने घर में ही कर सकते हैं। अपने माता पिता को जब यह कहेगें कि हम ने जो भी पाया है वह आपकी कृपा व आर्शीवाद से पाया है तो जो उनके चेहरे पर खुशी होती है वह उन्हे दुंनिया की और कोई चीज नही दे सकती। यही नही आपके घर का महौल ही बहुत सुखद हो जाता है। इस के विपरीत जहां **कृतध्नता(ungratefulness) का culture बन जाता है वहां क्लेश ही क्लेश रहता है।**

मोहपाश में फंसे धृतराष्टर ने तो महात्मा विदुर की बातें अनदेखी कर दी पर उनका यह प्रयत्न व्यर्थ नहीं गया। उनकी बातों का संकलन 'विदुर निती' आगे आने वाली पीढ़ियों के लिये मार्ग दर्षक बन गई

ब्रह्मचर्य की शक्ति

राजस्थान में एक राजा को स्वामी दयानंद ने ब्रह्मचर्य के महत्व के बारे में बताया तो राजा जो कई रानियां और रखेंले रखे हुये था, सवामी जी की बात पर हंस दिया। कुछ दिन बाद राजा अपनी घोड़ागाड़ी पर जा रहे थे कि अचानक रूक गई। बहुत चाबुक मारने पर भी घोड़ा आगे न जा पा रहा था। सारथी ने जब मुड़ कर देखा तो स्वामी जी ने पीछे से गाड़ी को पकड़ा हुआ था। स्वामी जीने राजा से कहा – यह है ब्रह्मचर्य की शक्ति

Success Mantra

Andrew Carnegie, the Scottish American industrialist and philanthropist, once observed, "There are two types of people who never achieve much in their life time: The person who won't do what he is told and the person who does no more than he is told." These words by one of the world's most successful 19th century businessmen need some attention, particularly for those among us, falling into the above two mentioned categories of people.

Helen Keller, the American author, political activist and lecturer who was the first deaf-blind person to earn a Bachelor of Arts degree reached this distinguished status only by following the creed of committing to much in all that she undertook in her physically-challenged life. As she put it, "I long to accomplish a great and noble task, but it is my chief duty to accomplish humble tasks as though they were great and noble. The world is moved along, not only by the mighty shoves of its heroes, but also by the aggregate of the tiny pushes of each honest worker."

Going by these thoughts, belonging to the elite group of achievers is not a daunting task. All it takes is committing to do much in all that there is to be done and then sticking to that commitment with a tenacious will and determination, as did Helen Keller. An anonymous quote reiterates this philosophy: Bite off more than you can chew, then chew it. Plan more than you can do, then do it. Point your arrow at a star, take your aim, and there you are. Arrange more time than you can spare, then spare it. Take no more than you can bear, then bear it. Plan your castle in the air, then build a ship to take you there!

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

घूमना भी एक विद्यालय है

भारतेन्दु सूद

अक्सर आप ने देखा होगा कि हम अपनी रोजमरह की जिन्दगी में इतने व्यस्त रहते है, ं कि अगर कहीं जाने की बात आये तो तुरन्त कह देते हैं––हमारे पास समय नहीं। यही नहीं उस दिनचर्या के इतने आदि हो चुके होते है monotonous कि हम यह महसूस करते हैं कि हमारे पास समय सचमुच नहीं। पर अगर बिमार पड़ कर बिस्तर पर आ जायें या कोई ऐसी चोट लग जाये जो कि बिस्तर पर कई दिनो के लिये रख दे तो समय बन जाता है। यही नहीं हमारे पास घर से न निकलने के कई अपने बनाये ही और भी कारण

है, उदाहरण के लिये–––घर अकेला नहीं छोड़ा जा सकता, देख नहीं रहे रोज कहीं न कहीं चोरियां हो रही है, डाके पड़ रहे हैं। और कुछ नही ंतो कह दिया, शरीर नहीं चलता, बाहर जा कर कुछ हो गया तो?

यह सभी बहाने हम इस लिये बनाते हैं क्योंकि हम बाहर घूमने के महत्व से अनभिज्ञ हैं, उसी तरह जैसे कि कईं सालों तक कैदी का जीवन जी रहा व्यक्ति स्वतन्त्र जीवन से अनभिज्ञ हो जाता है। मुझ से पूछें तो मैं यही कहूंगा कि घूमना एक पाठशाला है जो कि ज्ञान को बढ़ाता है, हम में आत्मविश्वास पैदा करता है, दूसरों के बारे में और अपने बारे में गलतफहमियों को दूर करता है, जीवन को उल्लास से भर देती है, हम नई बाते सीखते हैं, नये मित्र बनाते हैं। सब से बड़ी बात जब रोज की जिन्दगी से कुछ दिन के लिये अलग होते हैं तो जीवन तरो ताजा हो जाते हैं। में तो यह कहूंगा कि कई बार मानसिक रोग या परेशानी का ईलाज ही हवा पानी बदलना होता है और यह बहुत समय से चलता आया है, कोई नई बात नहीं। कई बार हमारे परिवार जनों को इस की बहुत आवश्यकता होती है पर आज हर कोइ दूसरे को सुझाव देने से भी डरता है ।

कछ समय पहले तक यह हवा पानी बदलना स्वभाविक ढंग से ही हो जाता था। वच्चे और मां दादा दादी, नाना नानी के पास महीनो रह कर आते थे। जब शादी विवाह, जन्म मरण की बात होती थी या कोइ घर में बिमार हो जाता था तो अक्सर एक दूसरे के पास कई दिन लगा कर आते थे। लोग धामिर्क स्थलों पर कुछ दिन साल में एक दो बार अवश्य बिताते थे, जिसे तीर्थ करना कहते थे, पर आज यह सब खत्म हो गया है। एक तो हर कोइ व्यस्त वहुत है दूसरा अपने घर के आराम को छोड़ना नहीं चाहता तीसरा दूसरों के घर में 5

star hotel की सुविधाएं ढूंढने की मानसिकता बन गइ है, कोइ भी adjust नहीं होना चाहता। जब से कारें आई हैं तब से तो रिश्तेदारों के घरों को छूने का ही प्रचलन रह गया है, चाहे शादी हो या उठाला। शादी हो तो आधे घंटे के लिये शादी.स्थल पर पहुंच जाते हैं और मरने पर शमशान भूमी या श्रधांजली स्थल पर हाजरी दे देते हैं। ऐसे में एक दूसरे के बारे में यहां तक की सगे सम्वन्धियों और उनके बच्चों के बारे में ही खबर रखना मुश्किल हो गया है वरना जब एक दूसरे के पास रहते थे तो रहते रहते कुछ समय बाद दिलों की बात होती थी। आज फोन तक ही सब सीमित है।

एक और बात जो सामने आई है कि बहुत से लोग खास कर युवा यह सोचते पाये गये हैं कि पहले बच्चों की जिम्मेवारियों से निपट लें फिर घूमने जायेंगे। अगर आप मुझ से पूंछे तो मैं यही कहूंगा कि वे अपना अमूल्य समय खो देते हैं। बाहर जाना और घूमना तो एक लगातार चलने वाली क्रिया होनी चाहिये। और दूसरा घूमने के लिये केवल पैसा और समय ही नही, स्वस्थ शरीर और उत्साह होना भी उतना ही आवश्यक है। आप बाहर के विकसित देश व अपने देश के लोगों में जो सब से बड़ा अन्तर देखेंगे वह यह है कि घूमना उनके जीवन की सब से महत्वपूर्ण क्रिया व शौक है जैसे कि पैसे जोड़ना और जायदादें बनाना हमारा शौक है। यह बात 1990 की है। मैं किसी दफतर के काम से दिल्ली में जनपथ होटल में ठहरा हुआ था। एक शाम मैं जब बालकनी में बैठा बाहर का नजारा देख रहा था तो देखा साथ वाली बालकनी में एक विदेशी बैठा है बातचीत हुई तो मैं हैरान हो गया जब उसने बताया **कि वह आस्टरेलिया में Truck** टरक चालक था और दो साल में जो पैसे बचा पाया उस से भारत घूमने की इच्छा को पूरा कर रहा था। मैं मानता हूं अपने जीवन की मूल जरूरतों को पूरा करने के साथ हमें बाहर घूमने भी अवश्य जाना चाहिये। अगर बच्चे को व्यवसायिक शिक्षा के लिये बैंक से कर्ज मिलने की सुविधा है तो लें दें आप क्यों पिसते जा रहें हैं। यह जिन्दगी फिर थोड़े ही आनी है। पर हम हिन्दुंसतानियों की मानसिकता तो यह हो गइ है पढ़ाने के बाद बच्चे को कार भी ले दो चाहे खुद जीवन भर चलाई न हो। जितने की एक नई कार आती है उतने में तो पति पत्नि सारा विश्व घूम सकते थे। पर हमने जीवन ही बच्चों के लिये बना लिया है, और कुछ नजर ही नहीं आता। ऐसे में अगर आप घूमना सचमुच महत्वपूर्ण समझते हैं तो जीवन के प्रति अपना नज़रिया भी बदलें।

एक बात जो और समाने आती है कि घूमने का अर्थ यह बिल्कुल नहीं की प्रसिद्ध और महंगे स्थलों पर कार, वातानकूल गाड़ीयों या हवाई जहाज द्वारा जाया जाये। आप अपने बजट के अनुसार कहीं भी जाये। जनसाधारण गााड़ियों और बसों द्वारा जा कर धर्मशालाओं और मन्दिरों में रह कर थोड़े पैसे में आप दिल की इच्छा पूरी कर सकते हैं। कहते हैं No pain, no gain उसी यात्रा में ही आप सीख सकते हैं जहां पैदल चलना पड़े, इन्तजार करना पड़े, कुछ धक्के भी खाने पड़े। उसी से लोगों के बारे में, वहां की संस्कृति के बारे में, खाने पीने के बारे में, रिवाजों के बारे मालुम होता है। घूमना कोई प्रयटक स्थल के दर्शन करना ही थोड़ा होता है। चिरस्मरणिय अनुभव तभी होते हैं जब हम कुछ मुश्किलों से गुजरें।

एक और घूमने का जो बड़ा फायदा है यह कि मन में जो दूसरों के बारे में सुनी सुनाई बातें होती हैं उनकी वास्तविकता पता लगती है। उदाहरण के लिये दुनियां में 50 से उपर ऐसे देश हैं जिनका धर्म इसलाम है। पर जिस तरह से इसलाम को पाकिस्तान या बंगलादेश में माना जाता है वह मिस्र या टर्की से बिल्कुल अलग है। यह मुझे घूम कर ही पता लगा कि मिस्र वाले जितनी सब्जियां खाते हैं उतनी तो हम भारत में भी नहीं खाते। यही नहीं खुलें में मांस मच्छली की दुकाने हमारे यहां अधिक नजर आती हैं वहां कम है लोग सब्जी और रोटी जिसे फला फल कहते है वही अधिकतर खाते हैं। जहां पाकिस्तान या वगलादेश मे लोग नियमित नमाज पड़ते नजर आयेंगे वहां मुश्किल से ही कोइ नजर आता है और आचरण उनका नमाज पढ़ने वालों से कहीं अच्छा है।

इसलिये चाहे आप किसी भी उमर के हैं, कैसी भी हालत में है, घूमना अपनी आदत बनायें। और कुछ नही तो कोई बिमार है उसका जा कर हाल ही पूछ आयें। यह न सोचें मरने पर एक ही बार जायेंगे।

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म्।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

महार्षिदयानन्द ओल्ड एज होम का उद्घाटन श्रीमती परतिमा देवी पत्नी श्री लंगिराज महापातरा चीफ जनरल मनेजर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा किया गया, महार्षिदयानन्द ओलड एज होम मे वृध माता के रहने का प्रबंध किया जा रहा है।

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह धार्मिक साथी 50 प्रति माह
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Aruna Narela

Suman Sharma

Kavita Garg

Shashi Sharma

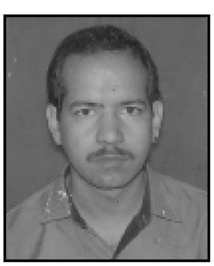

Arya Mahesh Garg

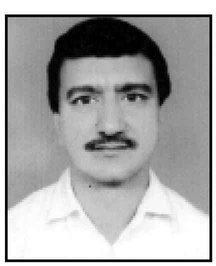

Jai Bhagwan Singla

Pradeep Sharma

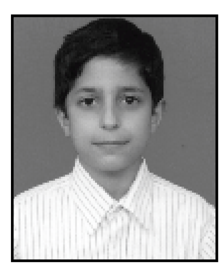

Utkarsh

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870